# गुरुजी की बिल्ली

गुरुजी अपने चेलों के साथ जैसे ही प्रार्थना करने बैठते आश्रम की बिल्ली कभी इधर जाती, कभी उधर। प्रार्थना में ध्यान लग ही नहीं पाता था। यह देख गुरुजी ने आदेश दे दिया कि प्रार्थना के वक्त बिल्ली को बाँधकर रखा जाए।

गुरुजी की मृत्यु के बाद भी प्रार्थना के वक्त बिल्ली को बाँधा जाना जारी रहा। कुछ साल बाद वह बिल्ली भी चल बसी। लेकिन प्रार्थना के वक्त गुरुजी की आज्ञा का पालन होता रहे इसलिए एक दूसरी बिल्ली आश्रम में लाई गई।

बहुत सालों बाद विद्वानों ने इस प्रथा को बनाए रखने के लिए चाँदी की एक बिल्ली बनाई और उसकी पूजा करने लगे।

सदियाँ बीत गईं। गुरुजी के विद्वान चेलों ने किताबें लिखीं। इन किताबों में जिसमें प्रार्थना के समय एक बिल्ली बाँधने के महत्व का बखान किया गया था।

प्रस्तुतिः अरविन्द गुप्ता

चित्रः कनक